॥ ओम शान्ति ॥

माता ओ माता, हे जगत्माता

माता ओ माता, तू है विश्व भाग्य विधाता ।
सिरपे तेरे ज्ञानकलश दे स्वयं गीताज्ञानदाता ॥

माता ओ माता, तू ही है स्वर्ग का द्वार ।
तुझसे ही होना है सारे जगत का उद्धार ॥

माता ओ माता, तू है जगज्जननी ।
तू है दानी, वरदानी, विश्वकल्याणी ॥

माता ओ माता, तू है ज्ञानगंगा पतितपावनी ।
ज्ञान, गुण, शक्तीयों की तू ही है स्वामिनी ॥

माता ओ माता, तू है नये युग की भोर ।
तेरे ही हाथों में है समस्त विश्व की डोर ॥

माता ओ माता, तू है प्रभु दिलतख्तनशीन ।
भगवान भी वारी जाये तुझपे, तू है पद्मापद्मभाग्यनशीन ॥

ब्रह्माकुमारीज, पुणे (मीरा सोसायटी)